मध्यस्थ दर्शन* के विधिवत अध्ययन-क्रम मार्गदर्शिका (संसाधन सहित)

<u>प्रस्तुति आशय:</u>

नवीन अध्येताओं के लिए मार्ग जानकारी सुलभ होना (छात्र अनुमान अनुसार)

श्रीराम नरसिम्हन, छात्र, 07.02.2025

*मूल प्रणेता एवं लेखक - श्री ए. नागराज

"प्राथमिक आधार" स्तर विवरण..2

चरण #1 परिचय शिविर.. 2

चरण # 2: अध्ययन बिन्दु शिविर.. 4

चरण #3: अवलोकन शिविर (Optional) 6

"क्रमबद्ध अध्ययन" स्तर विवरण...9

चरण #4: अध्ययन शिविर (पुस्तको के साथ प्रथम पठन).. 9

चरण #5: अध्ययन पुनावृत्ति एवं (श्रवण) गोष्ठी... 14

"विधिवत अभ्यास" स्तर विवरण 16

चरण #6: मनन-अभ्यास गोष्ठी (जारी)... 16

"समझ" स्तर विवरण..18

चरण #7, 8, 9: साक्षात्कार - बोध – अनुभव (वस्तु बोध) 18

सुझाव करता – श्रीराम नरसिम्हन, शोधार्थी , Jan 2023. अद्यतन किया गया 01.08.2023

यह मेरे अब तक के व्यक्तिगत अध्ययन यात्रा एवं सर्वेक्षण पर आधारित अनुमान मात्र है |

प्रत्येक व्यक्ति के लिए इस क्रम में भेद रहेगा/हो सकता है | किन्ही जानकार व्यक्ति के साथ ही इसे समझें, अध्ययन करें

“प्राथमिक आधार” स्तर विवरण

चरण #1 परिचय शिविर

चरण 1	परिचय #1 - जीवन विद्या परिचय - प्राथमिक
वस्तु	मानव लक्ष्य/उद्देश्य - सुख, समाधान... क्रम से जानना: • मानव : स्वयं, शरीर, गतिविधियाँ, समस्याएँ, समाधान। • परिवार : बुनियादी भावनाएँ, समस्याएँ । समाधान। 9 मुल्यो /7 संबंध। • समाज, 5 आयाम, मुद्दे, वांछनीय स्थिति। • प्रकृति/अस्तित्व: 4 पद , 4 आयाम, स्थान, इकाइयाँ, सह-अस्तित्व
आशय	• सहअस्तित्व में ही चैतन्य जीवन का परिचय। • जानना चाहता हूं, सुखी रहूं. जाग्रत होना है,जागृति। • आगे के अध्ययन की आवश्यकता है |
परिणाम	• प्रकृति, अस्तित्व, मानव उद्देश्य और जीवन के आयामों के बारे में सामान्य भ्रम स्पष्ट, संश्लेषण, अंतर्संबंध, बौद्धिक आराम देते हैं। • विभिन्न आंतरिक, पारिवारिक, सामाजिक और पारिस्थितिक मुद्दों में गड़बड़ी को समाधान-दिशा मिलती है। • समझने की आवश्यकता स्पष्ट हो जाती है। - स्वयं और दुनिया की कई समस्याओं के समाधान के रूप में। • स्वयं में सतर्कता शुरू होता है. • रिश्तों में संवेदनशीलता बढ़ती है|लोगों के साथ सहानुभूति बेहतर होगी| • धन और वस्तुओं से संबंध स्पष्ट होता है। • सामाजिक-योगदान के भागफल में सुधार होता है।

	• पारिस्थितिक भागफल में सुधार होता है।
अभ्यास	• प्रारंभिक पठन/विडियो/शिविरों में भाग लेना। • स्वयं और शरीर, आवश्यकताएँ, गतिविधियाँ और कार्यक्रम। • रिश्ते: विश्वास, इरादा, गलतियाँ जो हम करते हैं: सम्मान, आदि। स्व-नियमन। • चीज़ें/पैसा: किम्मत, मूल्य, उपयोगिता • स्वयं: मान्यताए, अपनाया गया व्यक्तित्व, लक्ष्य।
संसाधन	**परिचयात्मक लेख एवं पुस्तक** • परिचय पठन सामग्री **परिचय ऑडियो** • नागराजजी के परिचयात्मक ऑडियो सुनें **परिचयात्मक शिविर विडियो** 1. परिचय शिविर वीडियोस - ऑनलाइन देखें (Jeevan Vidya Official Channel.) 2. वीडियो परिचय नागराजजी (recommended!) **अगला कड़ी** • *** विभिन्न प्रबोधाकों का कम से कम दो से तीन जीवन परिचय शिविर करना सुझावित है** • **इसके बाद, अध्ययन बिंदु शिविर करें**
अगला कदम	• अध्ययन बिन्दु शिविर

चरण # 2: अध्ययन बिन्दु शिविर

चरण 2	परिचय #2 "अध्ययन बिन्दु परिचय शिविर"
अवधि	• 8-10 दिन, सुबह 9 बजे से शाम 6 बजे तक
पूर्वाअपेक्षाएं	• कम से कम एक परिचयात्मक वर्कशॉप /परिचय शिविर • आदर्श रूप से, परिचय शिबीर के बाद का पठन मॉड्यल पूरा कर लिया गया है|
वस्तु	• चेतना विकास से समाधान या , चेतना विकास से समाधान की आवश्यकता। • अस्तित्व का ज्ञान (अस्तित्व दर्शन ज्ञान) • चैतन्य स्व का ज्ञान (जीवन ज्ञान) • मानवीय आचरण का ज्ञान (मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान) • (विवेक एवं विज्ञान) • अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था
आशय	• इसका उद्देश्य दर्शन के मूल सिद्धांतों पर ध्यान जाना है। • यह एक विकल्प या विकल्प के रूप में कैसे समझा जाता है • सीधे सुनें मुख्य दर्शन वस्तु • 'अध्ययन' से जुड़ता है
परिणाम	• मध्यस्थ दर्शन वस्तु की “प्राथमिक संभावनाए”समझ आना • विविध आयाम में भास अथवा आभास होना शरू होता है • शास्त्र-पठन, अध्ययन के लिए तत्परता /समझना आवश्यकता प्रथमिकता।
अभ्यास	• जीवन - शरीर भेद । • जीवन - 10 क्रियाओं का बेहतर परिचय • संबंध , व्यवहार के मुद्दे.

	• समाज व्यवस्था में भागीदारी. • शास्त्र परिचय वाचन
संसाधन	• अध्ययन बिंदु पठन सामग्री • नागराजजी के अध्ययन वस्तु पर ऑडियो सुनें
अगला कदम	• अवलोकन शिविर

चरण #3: अवलोकन शिविर (Optional)

चरण 3	"अध्ययन बिन्दु सम्पूर्ण" - मूल तत्व अवलोकन
अवधि	• 12 दिन
पूर्वाअपेक्षाऐ	• कम से कम 1 परिचय शिविर + अध्ययन बिन्दु शिविर • एक-दो प्रारंभिक पुस्तक पढ़ें हों
वस्तु	• ज्ञान विवेक विज्ञान जानकारी । • अखंड समाज, सर्वभौम व्यवस्था, 10 सोपानिय व्यवस्था • अध्ययन, अभ्यास का मार्ग परिचितता • दर्शन शास्त्र पढना • शुरुआती पढ़ना और मीडिया।
आशय	• मूल-वस्तु, दर्शन रचना और पथ की स्पष्टता • वस्तु: मध्यस्थ दर्शन के मुख्य अवधारणाओं पर क्रमबद्ध स्पष्ट होना • दर्शन: लिखित दर्शन रूप रेखा स्पष्ट होना • मार्ग: अध्ययन, अभ्यास एवं वर्तमान जीने से सम्बंधित स्पष्टता
परिणाम	• सभी महत्वपूर्ण शब्द और अवधारणाएँ स्पष्ट हो जाती हैं। • सारांश-वस्तु ध्यान में आना • परिवार एवं समाज में "जागृति" आधारित परिणामों पर स्पष्टता • पूर्ण-पठन-अध्ययन के लिए तैयारी - (भौतिक और समाज के मुद्दों से स्वयं की ओर ध्यान जाना) • मध्यस्थ दर्शन सहज सम्पूर्ण मुख्य वस्तु क्रमवत स्पष्ट (चित्रित) होने में सहायता • जीने से सम्बंधित निर्णय, अभ्यास, विधि में स्पष्टता
अभ्यास	• शास्त्र पठन

	• जीवन - शरीर भेद । • जीवन क्रिया स्व-निरीक्षण शुरू होता है • समाज व्यवस्था में भागीदारी.
अगला कदम	विधिवत अध्ययन
संसाधन	• **नीचे दिया अवलोकन पठन क्रम देखें** • अवलोकन-कड़ी के पठन PDF download करें • पूर्व अवलोकन शिविर YouTube रिकॉर्डिंग • नागराजजी के अध्ययन वस्तु एवं विधि पर ऑडियो सुनें

अवलोकन module पठन क्रम – Foundation Module –

मूल स्रोत: मध्यस्थ दर्शन, ए.नागराज , madhyasth.org

सुझाव करता – श्रीराम नरसिम्हन, शोधार्थी , jan 2023. updated on 01.08.2023

उद्देश्य: मध्यस्थ दर्शन सहज वांग्मय अध्ययन के पूर्व तय्यारी एवं प्रोत्साहन हेतु, सुझावित उपमार्ग

प्रवेश (पूर्व तय्यारी)

- **७ दिवसीय 'जीवन विद्या प्राथमिक परिचय शिविर'** – २ करें + ऑनलाइन परिचय शिविर सुनें (एक से अधिक प्रबोधक का) (Link)
    - **परिचय शिविर के पश्चात पढने के** सामग्री देखें
- 7/10 **दिवसीय 'अध्ययन बिंदु परिचय शिविर'** – १ या २ करें + ऑनलाइन शिविर सुनें -अध्ययन बिंदु (Link#1, Link #2)

मूल तत्वों से अवगत होना (Foundation)

- #1 सह अस्तित्ववाद - एक परिचय (संकलन) - पढ़ें (Link से डाउनलोड करें)
- #2 प्रारंभिक पाठमाला ^ - (लेख संकलन) पढ़ें (Link से डाउनलोड करें)
- #3. १९९७ Video देखें
- #4. जीवन विद्या एक परिचय पुस्तक पढ़ें

- #5 नागराजजी विडियो (1999)- देखें
- #6. 1999 सहअस्तित्ववादी विज्ञान पठन^
- #7. नागराजजी का जीवनी पढ़ें
- #8 सत्संग-2005 Video, Babaji देखें
- #9 मूल तत्वों पर 2005 सत्संग संवाद) पढ़ें ^ + लिंक
- #10 Video - परिचयात्मक विडिओ - नागराजजी देखें
- #11. सम्पूर्ण परिचयात्मक ऑडियो – नागराजजी सुनें (विडियो से अतिरिक्त)
- #12. विकल्प पुस्तक पढ़ें (Link) +
- #13. विकल्प पर Video देखें (संक्षिप्त, Link) + (सम्पूर्ण, Link)
- #14. संवाद- 1 पढ़ें (Link)
- #15. संवाद विडियो (नागराज जी) YouTube
- #16. 'मध्यस्य दर्शन: एक अवलोकन' (संकलन) - पढ़ें +
- #17. १२ दिन "मूल तत्व अवलोकन" शिविर करें

(^ लाल फॉण्ट में लिखित सामग्री तैयार हो रहा है)

=> इसके पश्चात, मूल वांग्मय का विधिवत अध्ययन करें -

“क्रमबद्ध अध्ययन” स्तर विवरण

चरण #4: अध्ययन शिविर (पुस्तको के साथ प्रथम पठन)

चरण 4	अध्ययन शिविर. (12 पुस्तकों के साथ).
अवधि	• अंश कालीक: **2 से 3 वर्ष।** 1. 3 साल तक हर 3 महीने में 7-10 दिन: किताबें पढ़ने की मुख्य अवधारणाएँ • पूर्ण कालीक: **6 महीने से 3 वर्ष तक।** 1. 6 महीने से एक/दो/तीन साल के लिए एक गहन कार्यक्रम: किताबें पढ़ने और उत्पादन में अभ्यास आदि के साथ मुख्य अवधारणाएँ।
पूर्वअपेक्षाएं	• परिचय शिविर + अध्ययन बिन्दु (आदर्श रूप से 2 प्रत्येक) • पहले अवलोकन Module पूरा करें (सुझावित)
के बारे में	• समझने के लिए अध्ययन महत्वपूर्ण चरण है • मध्यस्थ दर्शन साहित्य को समझने और उसके अनुसार जीने में उचित प्रगति के लिए उसका व्यवस्थित अध्ययन आवश्यक है। • यह वास्तविकता के हर पहलू - प्रकृति, मनुष्य, मानव जीवन, पारिवारिक प्रणाली और सामाजिक और आर्थिक संगठनों में सर्वांगीण जांच को सक्षम बनाता है। • सुविधायुक्त कक्षा सत्र होते हैं, जिसके बाद परिसर में स्व-अध्ययन, चर्चा और कुछ शारीरिक गतिविधियों के सत्र होते हैं। • शाम को कई वर्षों से अध्ययन और अभ्यास में शामिल व्यक्तियों और परिवारों के साथ बातचीत करने का अवसर मिलता है। • प्रतिभागी आमतौर पर विभिन्न पृष्ठभूमि के वयस्क होते हैं, जिन्होंने कुछ 'परिचय' शिविर पूरे किए हैं।
वस्तु	• कुल १४ पुस्तक • ४ दर्शन, ३ वाद, ३ शास्त्र,

	• परिभाषा संहिता,संविधान, संवाद -
आशय	• 'मध्यस्थ दर्शन' सम्पूर्ण का प्रथम परिचय
परिणाम	• शब्द-परिभाषा स्पष्ट हो जाती है| • दर्शन में 'वस्तु' का जोडना स्पष्ट हो जाता है। • पूर्व मान्यताओं/विचारों से तुलना।
अभ्यास	• शास्त्र पाठनः परिभााषा • जीवन - शरीर भेद । • जीवन क्रिया स्व-निरीक्षण • व्यवहार मे ध्यान • कर्म-अभ्यास -अवश्यक्ता • समाज व्यवस्था में भागीदारी-आवश्कता।
पंजीकरण	• अध्ययन स्थली से संपर्क करे|
अगला कदम	• अध्ययन-अभ्यास गोष्ठी
संसाधन	(सुझावित) पहले अवलोकन Module पूरा करें **– विद्यार्थीयों द्वारा सहायक सामग्री –** • **पुस्तक सुलभ प्रथम अध्ययन क्रम (सुझावित). (नीचे देखें)** • १२ पुस्तक – 400 घंटे पठन शिविर @ Jeevan Vidya Official Channel **– नागराजजी द्वारा प्रमाणिक अध्ययन सामग्री –** • सम्पूर्ण YouTube वीडियो-Audio देखें • प्रकाशित ग्रन्थ – वर्तमान संस्करण– (दर्शन, वाद, शास्त्र)

उद्देश्य: मध्यस्थ दर्शन 'प्रथम पठन' हेतु सुलभ उपमार्ग (क्रम सुझाव)

मूल स्रोत: मध्यस्थ दर्शन, ए.नागराज , madhyasth.org

सुझाव करता – श्रीराम नरसिम्हन, शोधार्थी , jan 2023. updated on 01.08.2023

यह क्रम दर्शन के प्रथम पठन /परिचय को सुलभ करने-पूर्व तय्यारी के अर्थ में है |

द्वितीय आवृत्ति में आप 4 दर्शन > 3 वाद > 3 शास्त्र > संविधान क्रम में पढ़ें (नागराजजी का निर्देश यही है) |

उसके बाद जिज्ञासा अनुसार पढ़ें, कई बार|

पूर्व में 'अवलोकन Module' को किये रहना सुझावित है

- **परिचय शिविर - एक या दो, साथ में "अध्ययन बिंदु शिविर"**
- **मूल तत्वों से अवगत होना / अवलोकन (Basic Foundation)**

वांग्मय प्रथम पठन: ('अध्ययन शिविर') ~ 1 से 3 वर्ष

A) मूल ग्रन्थ पठन - 1 वर्ष

• मूल ग्रंथों का डाउनलोड लिंक • ऑडियो बुक्स लिंक	• Youtube पर सारे पुस्तकों का व्यख्या –Online Lockdown Lecture Series) • {#जो लोग प्रत्यक्ष रूप में शिविर कर सकते हैं, उनके लिए ऑनलाइन अध्ययन शिविर लेक्चर Optional हैं }

1. अनुभवात्मक अध्यात्मवाद_पढ़ें, शिविर अथवा Online Lecture Video देखें
2. समाधानात्मक भौतिकवाद_पढ़ें, शिविर अथवा Online Lecture Video देखें
3. मानव कर्म दर्शन - Part-3. (सहअस्तित्ववादी विज्ञान)_पढ़ें, शिविर अथवा Online Lecture Video देखें
4. व्यवहारात्मक जनवाद_पढ़ें, शिविर अथवा Online Lecture Video देखें

5. Video - Madhyasth Darshan Originals YouTube पर शेष ‘अध्ययन वस्तु विडियो’ देखें
6. मानव व्यवहार दर्शन_पढ़ें, शिविर अथवा Online Lecture Video देखें
7. व्यवहारवादी समाजशास्त्र_पढ़ें, शिविर अथवा Online Lecture Video देखें
8. आवर्तनशील अर्थशास्त्र_पढ़ें, शिविर अथवा Online Lecture Video देखें
9. अनुभव दर्शन_पढ़ें, शिविर अथवा Online Lecture Video देखें
10. परिभाषा संहिता_पढ़ें (मुख्य शब्द संकलन), शिविर अथवा Online Lecture Video देखें
11. एक ~ दो परिचय शिविर पुन: करें (जीने से समबन्धित मुद्दों का आंकलन)
12. ‘मध्यस्य दर्शन: मूल तत्व अवलोकन’ (संकलन) - पुनह: पढ़ें (Link) + ’१५ दिन मूल तत्व अवलोकन’ शिविर (पुनह) करें
13. ‘दिव्य पथ’ – नागराजजी का जीवनी_पढ़ें, शिविर अथवा Online Lecture Video देखें

सारांश पुस्तक

14. संचेतनावादी मनोविज्ञान पढ़ें + Online Lecture Video देखें
15. मानवीय संविधान पढ़ें + Online Lecture Video देखें

B) अध्ययन विधि एवं अभ्यास स्पष्टता (~ ४ से ६ माह)

16. संवाद- 2 पढ़ें (+ संवाद z, y, x)
17. Video - अध्ययन प्रक्रिया पर नागराजजी विडियो –देखें
18. Audio -अध्ययन प्रक्रिया पर नागराजजी – ऑडियो सुनें
19. Video - विद्यार्थी द्वारा अध्ययन प्रक्रिया, शोर्ट इंट्रो देखें + संक्षिप्त संकलन पढ़ें
20. Video - विद्यार्थी द्वारा अभ्यास दर्शन कैसे पढ़े? – विडियो देखें Link (YouTube)
21. अभ्यास दर्शन_पढ़ें, शिविर अथवा Online Lecture Video देखें

22. कर्म दर्शन (कर्म और उपासना खंड)_पढ़ें, शिविर अथवा Online Lecture Video देखें

23. Video - विद्यार्थी द्वारा अध्ययन प्रक्रिया परिचय शिविर | लेक्चर मोड़

- ! अभ्यास के ४ अंगों पर प्रारंभिक स्पष्टता, जीने से सम्बंधित स्पष्टता : "विद्यार्थी (बौद्धिक), भौतिक, गृहस्थ (व्यव्हार + भौतिक), समाज" जीवन में क्रम से

शास्त्राभ्यास {विद्यार्थी}	**व्यवहाराभ्यास** {गृहस्थ}
कर्माभ्यास (उत्पादन, सेवा): श्रम > स्वावलंबन > धन स्पष्टता {भौतिक, गृहस्थ}	**समग्र व्यवस्था में भागीदारी** अभ्यास स्पष्टता {समाज}
○ 'अभ्यास/जीने' के स्थान एवं स्वरूप चयन, कार्यक्रम – स्पष्टता एवं निर्णय *	

चरण #5: अध्ययन पुनावृत्ति एवं (श्रवण) गोष्ठी

चरण 5	(शास्त्राभ्यास परिपक्वता के लिए अध्ययन गोष्ठी)
सामग्री	● संपूर्ण प्रकाशित साहित्य + ऑडियो + वीडियो। - एकाधिक राउंड ● अप्रकाशित साहित्य+संकलन
आशय	● संपूर्ण श्रवण-निष्कर्ष।
गोष्ठी के बारे	● दर्शन ग्रंथों का कई बार आवृत्ति | (इस क्रम में आपका शब्द-आधारित सैद्धांतिक समझ विकसित होता हुए दिखेगा एवं आप पायेंगे की आप दूसरों को दर्शन बता पा रहे हैं) ● जीने के प्राथमिकता एवं स्थान में परिवर्तन करना | निम्न छह बिन्दुओं पर अनुकूलता/ उपलब्धता हेतु सोचना: 1. **भौतिक** वातावरण अनुकूलता (स्थान, विद्यालय, इत्यादि) 2. **मानव:** सहभागी लोग/परिवार , सांस्कृतिक वातावरण 3. **बौद्धिक** वातावरण – साथ देने, अध्ययन में मार्गदर्शन 4. **प्राकृतिक:** अर्थ पूर्ण श्रम/ कार्य / सेवा के लिए अवसर होना 5. **समाज** व्यवस्था में, योजना भागीदारी के लिए अवसर 6. **अर्थ:** अपने विद्यार्थी के यात्रा में सहारा हेतु धन राशि की उपलब्धता/स्रोत ● उत्साह एवं समय के सदुपयोग हेतु एक से अधिक योजनाओं में भागीदार होना (अपने अभ्यास के अर्थ में है)
परिणाम	● शब्द-परिभाषा-वस्तु निष्कर्ष का स्मरण होना चाहिए। ● तार्किक-दृष्टि स्थिरता...स्पष्टता जारी 1. A) जनाने- मानने की वस्तु (साक्षात्कार) 2. B) पहचाने-निर्वाह (जीने) की वस्तु 3. C) व्यवस्था, परम्परा की वस्तु 4. **D) अध्ययन-अभ्यास विधि एवं क्रियान्वयन चित्रण स्पष्ट।**
अभ्यास	● शास्त्र-परिभाषा, एक ही अर्थ ● जीवन क्रिया स्व-निरीक्षण, “जागृति विधि साधना” में प्रवेश

	● व्यवहार अभ्यास प्रवेश ● कर्म-अभ्यास प्रवेश ● समाज व्यवस्था में भागीदारी
संसाधन	• अध्ययन गोष्ठी सामग्री देखें **अध्ययन-अभ्यास प्रक्रिया शिविर वीडियो** ● अध्ययन विधि परिचय #1 ● अध्ययन विधि परिचय #२ **(साधन भाई)** ● अध्ययन-अभ्यास प्रक्रिया – लेक्चर 30 घंटे ● अध्ययन प्रक्रिया शिविर रिकॉर्डिंग

“विधिवत अभ्यास” स्तर विवरण

चरण #6: मनन-अभ्यास गोष्ठी (जारी)

चरण 6	मनन: मनन गोष्ठी **(शास्त्र अधिकार के अनंतर)**
सामग्री	• समस्त साहित्य - प्रकाशित+अप्रकाशित। , सभी ऑडियो, वीडियो। • सभी संकलन, शोध पत्र।
आशय	• पूर्ण मनन, साक्षातकार प्रारंभ
इस गोष्ठी के बारे	• हम अभी लिखित दर्शन में अधिकार प्राप्त किये हैं • मानवीयता एवं जीवन जागृति हमारे जीवन के **“प्रथम प्राथमिकता”** में आ चूका है • मनन में हमारा प्राप्त बौद्धिक/तार्किक/समझ, निष्कर्ष, एवं आतंरिक एवं बाह्य आचरण में परिवर्तित होता है (गुणात्मक परिवर्तन) • मनन सफलता हेतु नागराजजी का सम्पूर्ण ग्रंथालय देखें तथा विद्यार्थी संकलन-शोध पत्र उपयोगी है • मनन में प्रौढ़ता के अनंतर साक्षात्कार है, यहीं से ‘चेतना विकास’ प्रारंभ होता है • साक्षात्कार में प्रौढ़ता से अवधारणा होता है, इस भूमि में लिखित सुचना पर न्यूनतम निर्भरता रहती है | • अवधारणा के बाद बोध एवं अनुभव होता है
परिणाम	• साक्षात्कार वस्तु का आसवन, जीने की वस्तु • स्व-संस्कारों में गुणात्मक परिवर्तन • न्याय-धर्म-सत्य प्रत्यक्ष: इच्छा, विचार, आशा मे। -श्रवण के भावों में जीना, स्वयं होना। साक्षात्कार योग्य बनना। • चित्त तंत्रित जीवन में प्रवेश
अभ्यास	• **स्व-निरीक्षण, जागृति विधि साधना:** मन, वृत्ति, चित्त क्रियाओं का क्रमश द्दष्टा, मुल्यकंन (चिंतनाभ्यास पृष्ठभूमि) व्यव्हाराभ्यास (स्वयं में गुणात्मक परिवर्तन) • कर्माभ्यास • समाज व्यवस्था में भागीदारी

	• शास्त्र-अभ्यास
संसाधन	• मनन-अभ्यास गोष्ठी सामग्री देखें • जीवन क्रिया सम्बंधित लेख (ए. नागराज) • अप्रकाशित संवाद (ए. नागराज) • दर्शन से उपयोगी संकलन एवं विद्यार्थी शोध • सम्पूर्ण प्रामाणिक अप्रकाशित ग्रंथालय – ए.नागराज

“समझ” स्तर विवरण

चरण #7, 8, 9: साक्षात्कार - बोध – अनुभव (वस्तु बोध)

निम्नलिखित चरण आंतरिक उपलब्धियों के रूप में होते हैं और इनका कोई औपचारिक कार्यक्रम नहीं होता है, बल्कि सहकर्मी-समूहों और एक निपुण शिक्षक (बोध, अनुभव संपन्न शिक्षक) की मदद लेते हैं।

चरण 7	**अवधारणा .**
सामग्री	• अर्थ
आशय	• वस्तु में स्थिरता - न्याय-धर्म-सत्य | • न्याय धर्म सत्य रूपी "धारणा" स्थापना.
परिणाम	• न्याय धर्म सत्य देश एवं तत्व में चित्त-वृत्ति का संयंत होना । • - मानवियता पूर्ण जीवन (आचरण, चरित्र, न्याय व्यवहार) का प्रतीति पूर्वक जीना, अपराध, अन्याय, आसक्ति का अभाव। स्थूल हठ अभिमान से मुक्ति • आत्मबोध रहित बुद्धि तंत्रित जीवन। - प्रज्ञा. विकसित चेतना ज्ञान | स्वयं के चैतन्य जीवन स्वरूप होने पर विश्वास • चित्त के संस्कार/स्वीकृतियों का द्रष्टा। मोह-लोभ-काम; मद-मात्सर्य-क्रोध क्षीणता/…मुक्ति • स्वयं में विश्वास स्थायी होना – अस्तित्व के प्रति विश्वास, जागृति के प्रति विश्वास • ~ परिवार मानव
अभ्यास	• चिंतनाभ्यास: चित्त, वृत्ति, मन क्रियाओं का द्रष्टा, मूल्यांकन । • व्यवहार अभ्यास
संसाधन	जागृत मानव

चरण 8	बोध, पूर्ण बोध
सामग्री	• अवधारणा का सार भूत भाग
आशय	• स्थिरता, केन्द्रीकृत होना। • ध्यान.
परिणाम	• विकसित चेतना #2 (देव) का बोध। • अहंकार से मुक्ति, • आवेश -हठ-अभिमान से मुक्ति • मानवीयता (चरित्र, आचरण, न्याय एवं समाधान) का बोध पूर्वक जीना : • प्रखर प्रज्ञा, आत्मनुशासित जीवन। , निष्ठा. • दृष्टा पद • ~समाज मानव
अभ्यास	• चिंतनाभ्यास: बुद्धि, चित्त, वृत्ति, मन क्रियाओं का दृष्टा, मूल्यांकन । • व्यव्हाराभ्यास - प्रेम।
चरण 9	**अनुभव *(*पूर्ण बोध के साथ हो सकता है)***
सामग्री	• बोध
आशय	• पार्गामीयता का अनुभव | प्रमाण • मैं और मेरे में असंदिग्धता
परिणाम	• न्याय-धर्म-सत्य रूपी आचरण की पूर्णता (त्रुटी विहीनता) • तीनों ज्ञान विवेक विज्ञान की पूर्णता • ऋतंभरा प्रज्ञा • ~विश्व मानव: मानव, देव, दिव्य मानवीयता अनुभवमूलक प्रमाणित करना • दृष्टा पद प्रतिष्ठा, पूर्णता। • सहज निष्ठा.
अभ्यास	• प्रमाणित करना : क्रमश: मानव, देव, दिव्य चेतना